Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी के विकास में कृत्रिम मेधा की भूमिका

डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील*
प्राध्यापक, हिंदी विभाग
के.आर.एम. महिला महाविद्यालय, नांदेड

शोध सार

कृत्रिम मेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बल के रूप में उभरी है, जिसका हिंदी भाषा के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। यह शोध-पत्र हिंदी के संदर्भ में कृत्रिम मेधा की भूमिका एवं प्रभाव का विश्लेषण करता है। इसमें भाषा अनुवाद, सामग्री निर्माण, शिक्षण, स्वचालित सार-लेखन, भाषा संसाधन निर्माण, और वाचिक (स्पीच) प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा के अनुप्रयोगों एवं योगदान की समीक्षा की गई है। साथ ही, इसके सामने आने वाली चुनौतियाँ, जैसे भाषाई सूक्ष्मताओं का संरक्षण, प्रामाणिकता बनाए रखना, तथा डेटा असमानता आदि पर भी चर्चा की गई है। पत्र में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि कृत्रिम मेधा हिंदी के डिजिटल विस्तार, पहुँच और कार्यक्षमता को बढ़ाने में एक सशक्त सहायक है, किन्तु इसके उपयोग में भाषाई समृद्धि और सांस्कृतिक प्रासंगिकता के संरक्षण पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

बीज शब्द: कृत्रिम मेधा, हिंदी भाषा विकास, भाषा प्रौद्योगिकी, प्राकृतिक भाषा संसाधन,

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील
Email: kalyanpatil78@gmail.com

कृत्रिम मेधा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक उभरता हुआ क्षेत्र है जो विज्ञान के अंतर्गत आता है और मशीनों को उन कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करता है जिन्हें सामान्यत मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। ए.आई सिस्टम्स डाटा के आधार पर स्वयं से सीखने की क्षमता रखते हैं, जिसे मशीन लर्निंग कहा जाता है। ए.आई. सिस्टम मानव भाषा को समझने और प्रोसेस करने में सक्षम होते हैं। सिस्टम्स बड़े डाटा सेट्स का विश्लेषण करके त्वरित और सटीक निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। ए.आई. सिस्टम छवियों और वीडियो की पहचान और विश्लेषण कर सकते हैं। इसका उपयोग रोबोट को नियंत्रित करने और उन्हें स्वायत्तता से कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए किया जाता है।

कृत्रिम मेधा का अर्थ :- ऐसी मशीनें या कंप्यूटर सिस्टम्स बनाना जो मानव जैसी सोच, समझ निर्णय लेने की क्षमता और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता रखते हों। कृत्रिम मेधा ए.आई एक कंप्यूटर विज्ञान की शाखा है जिसमें ऐसे एल्गोरिद्म और सिस्टम्स बनाए जाते हैं जो मानव की तरह सोचने, सीखने, समस्या हल करने और निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। ए.आई सिस्टम्स का उद्देश्य मानव बुद्धि की नकल करना और उसकी क्षमता को बढ़ाना होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए.आई उन कंप्यूटर प्रणालियों को संदर्भित करती है जो जटिल कार्य करने में सक्षम है जिन्हें ऐतिहासिक रूप से केवल मनुष्य ही कर सकता था जैसे तर्क करना, निर्णय लेना या समस्याओं को हल करना।

आज ए.आई कई तरह के तकनीकों का वर्णन करता है जो हमारे द्वारा प्रतिदिन उपयोग की जाने वाली कई सेवाओं और वस्तुओं को शक्ति प्रदान करता है- टीवी शो की अनुशंसा करने वाले ऐप से लेकर कम समय में ग्राहक सहायता प्रदान करने वाले चैटबांट

तक।

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन का माध्यम बन रही है। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। साहित्यिक सृजन, अनुवाद, आलोचना, शोध, संरक्षण और अभिलेखन जैसे विविध क्षेत्रों में AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। AI आधारित टूल्स न केवल कविताओं, कहानियों और निबंधों की रचना में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, बल्कि हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुँचाने में भी योगदान दे रहे हैं। साथ ही, डिजिटल संरक्षण और टेक्स्टमाइनिंग जैसी तकनीकों ने साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित और शोध के लिए सुलभ बना दिया है। हालाँकि, इसके उपयोग से प्रामाणिकता, नैतिकता, कॉपीराइट और पारंपरिक पठनसंस्कृति जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में हिंदी साहित्य में AI की भूमिका, संभावनाएँ, चुनौतियाँ और उद्धरणों के माध्यम से इसका विवेचन किया गया है।

हिंदी साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI):

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए.आई की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। आज चार्टजीटीपी और अन्य जेनरेटिव ए.आई टूल्स कविता, कहानी, और निबंध लेखन में नए विषयों और शैलियों का सृजन कर रहे हैं। लेखक इन उपकरणों का उपयोग विषयविस्तार, समृद्ध शब्दावली तथा शैलीगत प्रयोगों के लिए कर रहे हैं, जिससे साहित्यिक सर्जन में नवीनता और विविधता आ रही है। शिक्षण और प्रशिक्षण की प्रक्रिया में भी ए.आई एक प्रभावी साधन के रूप में उभरा है, जो छात्रों को रचनात्मक लेखन की तकनीकी सीखने और लेखकीय अभिव्यक्ति को बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। भाषाई अनुवाद और आलोचना के क्षेत्र में भी ए.आई का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ए.आई आधारित अनुवाद टूल्स हिंदी साहित्य को अंग्रेजी एवं अन्य वैश्विक भाषाओं में तथा अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवादित कर रहे हैं, जिससे साहित्य की पहुंचे और प्रभाव क्षेत्र का विस्तार हुआ है। इसी प्रकार ए.आई सॉफ्टवेयर साहित्यिक पाठ का भाव शैली संरचना का गहन विश्लेषण करने की क्षमता रखते हैं, जो आधुनिक साहित्यिक समीक्षा और आलोचना को नया दृष्टिकोण प्रदान कर रही है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए.आई से हिंदी साहित्य:-

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग हिंदी साहित्य में विविध रूपों में हो रहा है, जिसके कुछ उल्लेखनीय उदाहरण इसे स्पष्ट करते हैं। सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में शोधार्थियों ने चार्टजीटीपी की सहायता से डिजिटल युग के उदासी विषय पर कविता रचना की कविता की पंक्तियां डिजिटल शोर में खो गया मन, / खोज रहा है शब्दों का आशय वन - यह दर्शाती है कि ए.आई और मानव के संयुक्त प्रयास से सृजनात्मक लेखन संभव है और मशीन लेखक का सहयोगी बन सकती है। इसी प्रकार कहानी लेखन के प्रयोग में एक आभासी मित्र जिसने इंसानी भावनाओं को समझना शुरू कर दिया जैसे विषय पर लघुकथाएं ए.आई टूल्स द्वारा तैयार की गई, जिन्हें बाद में लेखक ने संशोधित कर अंतिम रूप दिया। यह प्रयोग मानवीय रचनात्मक और तकनीकी सहयोग के समन्वय का प्रमाण है।

अनुवाद के क्षेत्र में ए.आई की भूमिका महत्वपूर्ण है उदाहरण स्वरूप प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी पूस की रात का अंग्रेज़ी अनुवाद ए.आई मैं इस प्रकार प्रस्तुत किया - hulku, despite the biting cold guards the field all night under the vast sky ... । इससे यह फर्स्ट होता है कि हिंदी साहित्य को वैश्विक पाठकों तक पहुंचने में ए.आई एक प्रभावी सेतु का कार्य कर रहा है इसी प्रकार कबीर के दोहे जैसे साईं इतना दीजिए, जामें कुटुंब समाय का भी ए.आई टूल्स ने विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य की पहुंच को विस्तृत किया है।

संरक्षण और अभी लेखन के क्षेत्र में भी आई तकनीकी का अनुप्रयोग उल्लेखनीय है भारतेंदु हरिश्चंद्र की पांडुलिपियों को डिजिटल स्कैनिग और ओसीआर तकनीक से डिजिटलीकृत कर ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया है, जिससे शोधकर्ताओं को उनका

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

उपयोग सुगमता से हो पा रहा है। इसी प्रकार प्रेमचंद रचनावली में ए.आई आधारित सर्च तकनीकी के प्रयोग से शुद्ध भारतीय हजारों पशतो में से किसी भी प्रसंग या उदाहरण को तुरंत ढूंढ सकते हैं साथ ही महादेवी वर्मा की कविताओं को ए.आई वॉइस क्लोनिंग और टेक्स्टटूस्पीच तकनीकी से ऑडियो बुक के रूप में संरक्षित किया गया है, जिससे नई पीढ़ी तक उनकी कृतियां श्रव्य स्वरूप में पहुंच रही है।

आलोचना और शुद्ध कार्य में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग देखा जा सकता है उदाहरण स्वरूप निर्मल वर्मा के उपन्यास का sentiment analysis कर यह पाया गया कि उनके लेखन में अस्तित्व वादी भवबोध और एकाकीपन की पुनर्वती लगातार पर लक्षित होती है इसी तरह महादेवी वर्मा की कविताओंका textmining द्वारा विश्लेषण की गई। इस प्रकार ए.आई न केवल साहित्यिक सर्जन बाल की साहित्यिक आलोचना और अनुसंधान की प्रक्रिया को भी अधिक गहन और व्यवस्थित बना रहा है।

लेखक का सहायक या सह-लेखक

सृजनात्मक लेखन की प्रक्रिया में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक शक्तिशाली सहायक के रूप में उभर रही है। हिन्दी लेखकों के लिए, यह कई तरह से उपयोगी हो सकती है। यह विचार-मंथन (brainstorming) के लिए नए विचार उत्पन्न कर सकती है, कहानी के लिए संभावित कथानक या पात्रों की रूपरेखा (outlining) तैयार कर सकती है, और सबसे महत्वपूर्ण, 'राइटर ब्लॉक' की स्थिति से बाहर निकलने में मदद कर सकती है। इस भूमिका को 'संवर्धित रचनात्मकता' (augmented creativity) के रूप में वर्णित किया गया है, जहाँ एआई मानव लेखक की कल्पना को प्रतिस्थापित नहीं करता, बल्कि उसे नए तरीकों से उत्तेजित और विस्तारित करता है।उदाहरण के लिए, एक लेखक किसी कहानी के लिए एक पात्र विकसित कर रहा है और उसे पात्र के संवादों के लिए प्रेरणा की आवश्यकता है। वह एआई को पात्र की पृष्ठभूमि और व्यक्तित्व का विवरण देकर संवाद के कुछ विकल्प उत्पन्न करने के लिए कह सकता है। ये विकल्प अंतिम मसौदे का हिस्सा नहीं बन सकते हैं, लेकिन वे लेखक को सोचने के लिए एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि लेखक एआई-जनित सामग्री पर अत्यधिक निर्भर न हों। नैतिक और रचनात्मक दोनों ही दृष्टिकोणों से यह आवश्यक है कि लेखक एआई द्वारा उत्पन्न किसी भी पाठ को अपनी अनूठी शैली, आवाज और दृष्टिकोण में पूरी तरह से फिर से लिखें। एआई को एक सहयोगी के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि एक विकल्प के रूप में। यह एक ऐसा उपकरण है जो रचनात्मक प्रक्रिया का समर्थन कर सकता है, उसे प्रतिस्थापित नहीं कर सकता।

हिंदी साहित्य में ए.आई की चुनौतियां और समाधान :-

हिंदी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए.आई का प्रवेश अवसरों के साथ-साथ अनेक चुनौतियां भी लेकर आया है। सर्वप्रथम प्रमाणिकता का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ए.आई द्वारा रचित साहित्य की मौलिकता पर प्रश्न चिन्ह बना रहता है। इस चुनौती का समाधान मौलिकता परीक्षण करने वाले विश्वसनीय टूल्स के विकास तथा लेखन प्रक्रिया में पारदर्शिकता सुनिश्चित करने से संभव हो सकता है। नैतिकता की दृष्टि से भी लेखक और मशीन के योगदान की सीमा निर्धारित करना कठिन है। इस संदर्भ में साहित्यिक संस्थानों और शैक्षणिक निकायों द्वारा स्पष्ट दिशानिर्देशन एवं आचारसंहिताएं तैयार की जानी चाहिए।

भाषाई संवेदनशीलता भी एक प्रमुख समस्या है, क्योंकि हिंदी भाषा की सांस्कृतिक बारीकियों और भावगहनता को AI अभी पूरी तरह नहीं पकड़ पा रहा है। इस चुनौती का समाधान भारतीय भाषाओं पर आधारित व्यापक कॉर्पस (corpus) तैयार करने तथा भाषाविदों और तकनीकी विशेषज्ञों के सहयोग से संभव हो सकता है। कॉपीराइट उललंघन और पायरेसी का संकट भी गहराता जा रहा है, क्योंकि डिजिटल मंचों पर साहित्यिक कृतियां बिना अनुमति के अपलोड हो जाती हैं। इसका समाधान कड़े डिजिटल, नियमों,

ब्लॉकचेन तकनीक आधारित लेखनपंजीकरण तथा प्रभावित विवधक प्राविधानों के माधयम से किया जा सकता है।

सोशल मीडिया ने साहित्य को लोकतांत्रिक स्वरुप तो दिया है, किंतु इसके कारण साहित्यिक गुणवत्ता प्रभावित हुई है। इस समस्या से निपटने के लिए साहित्यिक मंचों और प्रकाशन संस्थानों को गुणवत्ता आधारित मूलयांकन एवं समीक्षात्मक संस्कृति को बढ़ाििा देना चाहिए। डिजिटल साहित्य के कारण पाठकों की गहराई से पढ़ने की क्षमता में आई कमी भी एक गंभीर चुनौती है। इसका समाधान 'डीप रीहडंग' (deep reading) को प्रोत्साहित करने वाले शैक्षणिक कार्यक्रमों तथा पठनअभियानों से संभव है। अंततः, पारंपरिक पुस्तक संस्कृति भी AI और डिजिटल माधयमों के प्रसार से प्रभावित हो रही है। इस संकट से निपटने के लिए आवश्यक है कि प्रिंट और डिजिटल साहित्य के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए तथा पुस्तकमेलों, साहित्यिक उत्सवों और पठनप्रवृत्ति को बढ़ाििा देने वाले अभियानों का आयोजन किया जाए। स्पष्ट है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उतपन्न चुनौतियां जटिल और बहआयामी हैं, किंतु यदि तकनीकी नवचार और साहित्यक मूलयों के मध्य सम्यक संतुलन स्थापित किया जाए, तो इन समसयाओं का समाधान संभव है और हिंदी साहित्य नई ऊंचाइयों तक पहुंच सकता है।

नवीन साहित्यिक रूपों की संभावना

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में पारंपरिक रेखीय कथाओं से परे नए साहित्यिक रूपों को सक्षम करने की क्षमता है। यह गैर-रेखीय (non-linear), हाइपरटेक्स्टुअल (hypertextual), और इंटरैक्टिव कथाओं के निर्माण की सुविधा प्रदान कर सकता है, जहाँ पाठक कहानी के पथ को प्रभावित कर सकता है। हिन्दी साहित्य में, यह कहानी कहने के ऐसे नए तरीकों को जन्म दे सकता है जो पारंपरिक प्रिंट माध्यम की सीमाओं से परे हों। उदाहरण के लिए, एक ऐसा डिजिटल उपन्यास जिसकी कहानी पाठक की पसंद के आधार पर बदलती है, या एक ऐसी कविता जो पाठक की भावनाओं के अनुसार अपनी पंक्तियों को पुनर्व्यवस्थित करती है। ये रूप साहित्य को एक स्थिर वस्तु से एक गतिशील और सहभागी अनुभव में बदल सकते हैं, जिससे पाठकों और लेखकों के बीच संबंध की प्रकृति भी बदल जाएगी।

भविष्य के लिए शोध एजेंडा हिन्दी साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का क्षेत्र अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, और भविष्य के शोध के लिए कई महत्वपूर्ण प्रश्न खुले हैं। एक महत्वपूर्ण शोध एजेंडा विकसित करना आवश्यक है जो इस क्षेत्र के विकास को निर्देशित कर सके। भविष्य के शोध के लिए कुछ प्रमुख प्रश्न इस प्रकार हो सकते हैं: भाषाई और सांस्कृतिक अनुकूलन: क्या हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित छोटे, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील भाषा मॉडल (Small Language Models) विकसित किए जा सकते हैं जो बड़े, सामान्यीकृत मॉडल की तुलना में सांस्कृतिक सूक्ष्मताओं को बेहतर ढंग से समझ सकें? शैलीगत विश्लेषण: क्या एआई का उपयोग हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों (जैसे छायावाद, प्रगतिवाद, नई कहानी) या लेखकों (जैसे प्रेमचंद, निर्मल वर्मा) की शैलीगत विशेषताओं का कम्प्यूटेशनल रूप से विश्लेषण करने और उन्हें मॉडल करने के लिए किया जा सकता है ? रचनात्मकता पर दीर्घकालिक प्रभाव: हिन्दी लेखकों द्वारा एआई उपकरणों को अपनाने का उनकी रचनात्मक प्रक्रियाओं और साहित्यिक शैली पर दीर्घकालिक प्रभाव क्या होगा? क्या यह शैलीगत समरूपीकरण को बढ़ावा देगा या नई और विविध अभिव्यक्तियों को जन्म देगा? पाठकीय स्वागत: हिन्दी पाठक एआई-जनित या एआई-सहायता प्राप्त साहित्य पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे? क्या प्रामाणिकता और मानव-रचित कला के प्रति उनकी अपेक्षाएँ बदलेंगी?इन प्रश्नों पर व्यवस्थित शोध हिन्दी साहित्य को प्रौद्योगिकी के इस नए युग में अपनी दिशा निर्धारित करने में मदद करेगा।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी साहित्य दोनों ही आधुनिक युग की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। एक ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव बुद्धि की

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

नकल करने का प्रयास करती है, वहीं दूसरी ओर साहित्य किसी व्यक्ति के जीवन, भाषा और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करती है। इन दोनों के सामंजस्य से कला के क्षेत्र में एक नई दिशा और दृष्टिकोण उभर रहा है, जो हमारे समाज और संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय कला संस्कृति के बीच का संबंध एक नई दिशा दिखा रहा है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को आधुनिकता की ओर ले जा रहा है। यह संबंध न केवल भारतीय साहित्य और कला को उद्देश्य प्रदान करता है, बल्कि भारत की विविधता और समृद्धि को विश्व के सामने प्रस्तुत करता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारतीय कला संस्कृति का मेल यह स्पष्ट करता है कि प्रौद्योगिकी का उपयोग कला को एक नया आयाम देता है, जिससे कलात्मक समृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है। इस संबंध ने कला को अधिक प्रभावी और अद्वितीय बनाया है और भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका को भी बनाए रखा है। इससे न केवल भारतीय कला संस्कृति के विकास में मदद मिली है, बल्कि इसे उच्च स्तर तक ले जाने का एक माध्यम भी मिला है, जिसके माध्यम से भारतीय कला संस्कृति आधुनिक विश्व के साथ कदम मिलाकर चल सकती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कला संस्कृति में भी शुरू हो गया है, जैसे कि रंग, रूप और आयाम पर सांस्कृतिक शोध करने की तकनीकें। इससे कला की विविधता और समृद्धि को एक नई दिशा मिल रही है और कला शिल्प कौशल में नए और विशिष्ट रूप उभर रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी साहित्य के इस मेल से आधुनिक तकनीकी योगदान कला के नए आयाम खोल रहा है। उदाहरण के लिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग चित्रकला और ग्राफिक्स डिजाइन में किया जा रहा है, जिससे विशेष रूप से 3डी और आभासी कला के क्षेत्रों में नए अनुभव सृजित हो रहे हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कला संस्कृति मिलकर नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। ये दोनों क्षेत्र एक मजबूत और समृद्ध समाज के निर्माण और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। प्रस्तुत शोध लेख में विस्तार से चर्चा की गई है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारतीय साहित्य के संरक्षण और विकास में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष:-

हिंदी साहित्य के विकास में कृत्रिम मेधा की भूमिका बहुआयामी और परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है। सृजनात्मक लेखन, अनुवाद, संरक्षणअभीलेखन और आलोचनाशोध जैसे विविध क्षेत्रों में ए.आई ने नए अवसर उपलब्ध कारण है। उदाहरण से स्पष्ट है की कविता, कहानी और निबंध लेखन में ए.आई लेखक का सहायक बन सकता है। अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच तक पहुंचा जा सकता है तथा संरक्षण और अभी लेखन की प्रक्रिया ने साहित्यिक धरोहर को सुरक्षित कर और सुलभ बना दिया है साथ ही आलोचना और शोध में प्रयुक्त ए.आई तकनीक के साहित्यिक पाठ के भाव संरचना और प्रतीकात्मक प्रयोग का सुषमा विश्लेषण कर रही है।

हालांकि इन अवसरों के साथ अनेक चुनौतियां भी जुड़ी है- जैसे प्रमाणिकता, नैतिकता, कॉपीराइट, भाषाई संवेदनशीलता और पारंपरिक पठनसंस्कृति का संकट। किंतु इन चुनौतियों के समाधान भी संभव है बशर्त तकनीकी विकास और साहित्यिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। मौलिकता जांचने वाले टूल्स, कॉपीराइट सुरक्षा के लिए डिजिटल नियम, भाषाई कॉपस निर्माण तथा समीक्षा संस्कृति को प्रोत्साहन जैसे उपाय इस दिशा में सहायक हो सकते हैं।

स्पष्ट है की कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य को नई ऊंचाइयों तक ले जाने की क्षमता रखती है। यह लेखक के लिए प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि सहयोगी सिद्ध हो सकती है, बशर्त इसका उपयोग विवेकपूर्ण और रचनात्मक दृष्टि से किया जाएं। आने वाले समय में ए.आई हिंदी साहित्य को वैश्विक पटल पर और भी सशक्त रूप में प्रस्तुत करेगा तथा साहित्यिक अध्ययन और शोध को नई दिशा प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

१) शर्मा, रमेश (2023). कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनात्मकता। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।

२) शर्मा, रामविलास. आधुनिक हिंदी साहित्य और तकनीक। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2021।

३) Kumar, A. AI and Indian Languages। New Delhi: Sage Publications, 2022.

४) Various Online Resources on Generative AI and NLP.

५) मिश्र, रामदरश. हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2005.

६) नेहरू युवा केंद्र संगठन. भारतीय युवाओं में पाठन संस्कृति की प्रवृत्ति। नई दिल्ली, 2015.

७) Sharma, R. (2022). Digital Humanities and Indian Languages। Journal of Digital Humanities, Vol. 4(2).

८) Tiwari, P. (2020). Hindi Sahitya aur Digital Media। Vani Prakashan.

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)